

भारत का इतिहास
पृष्ठ १२३

II-II

२५ मन्त्रान् ॥ गणेशाय नमः ॥ दत्तं गवने मय का मया नै ॥ यथा काम दत्त न क स्या निष्पत्तयः ॥
 २६ ॥ मया प्रष्टव्यं जातिर्न वैश्वी सल्लस्य निष्पत्तय निष्पन्नं दासिदं न च वाक्कन ॥ यत्नमान काय य किं न्यया
 २७ ॥ दत्तं गति ॥ गणवानाद ॥ दत्तं वीजं मृद्विधं सत्वाः संसारं संसारं नैस्म ॥ न न मोक्ष काम ॥ दत्तं गति ॥
 २८ ॥ उत्पन्नं गति ॥ श्रीमदा कालाय नमः ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं न काम दत्तं च ॥ दत्तं गति ॥ यामी न्यः ययि सा ॥
 २९ ॥ नमः दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥

३० ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥
 ३१ ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥
 ३२ ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥
 ३३ ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥
 ३४ ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥ दत्तं गति ॥

कमलवसंरगायाववत॥ यच्छमकेयप्रहायायकरुया॥ माताहमिचेवकाक
 ऊं धात्वस्मिंके४ म्मुमृति४ म्मुकुलि४ म्मुकसेचसफाहिवकम्मुयकास्यात्॥
 प्रहामहसंप्रुचववअष्टमेवित्यतयाः आगित्यांयप्रिकिडिमात्तवमयस्वम
 नकायत॥ दमोमे॥ मथोष्टव्य॥ यथनहात॥ साएधुत्सर्वमासगृहंयवंगरस्मा
 दिहाअरिथकंयल्पीयावत्॥ असंधनीयंगुग्निथंविदित्वावप्रकृतायथान्याः

यथैव कुर्यं महासा नासमूर्त्तनासकंतिरात्वायिकयास्तित्यतसत्त्वस्य इष्टं कुर्यात्
 सितायथमागौ कथायह गवाङ्कनं तथा यदि रुच्यत आहिरुक्कं कुक्कमरगादया
 कालहासमयं यथा ॥ ॥ श्रीमहाकालकंठवज्रालीषकयटलवर्तुर्थ ॥ ॥
 दन्ताहिरुक्कयाध्यामि ॥ ॥ युधमंद्याहिरिषिं व्यामानेकललोत्ररुक्तेन दन्तद्वी
 ति ॥ ॥ अर्ग्ययाहादीयतस्य किमकुं वधिरिक्तेन ॥ ॥ उंकालमाहिनयनं ग्राहा ॥ ॥

उं तुलाधिष्ठितं साहा ॥ उदका लिखितं कुरु दीयक ॥ यच्च समुद्रोदकं यथा प्रसिद्धं यत्रिय
 र्क्यवियुक्तं दधनीनां पयस्य वृद्धिर्भवति ॥ कस्तुरिका त्रसूगन्धद्राक्षाहि शमिष्ठुता
 समयपात्रयानि सर्वं दवा ॥ पुनियलिया निष्कृत्वा ॥ श्री महाकाल मर्कटाय नमः ॥
 साहिधकपटल यच्छ मधु ॥ ॥ दधी प्रसूता ॥ सर्वं कुरुति न्य ॥ संशयः
 मापन्ना ॥ ॥ इर्ममस्य पा फं रगवन् सख सव माह ॥ रगवन् तय न संश

११

य मवाद्या कसिह पटल नख नाद्यं सिद्धिदं गी मकर ॥ कुरु म संदहा कि
 म गी तं किं मर्थं रुध्य क ॥ नाद्यं ववा दव ताहि धक य ना प्रव क थि नां द्व
 घादि मुडां मृदु दम मां के स्य सर्वं वां वी ज मरु पटल या क ॥ दवा वी ज
 कं निर्या नि ॥ ॥ मजा ना किं व यि मं वी ज पुला वः किं वा रा रगवान क
 य स मथ पृकथ मा व न क ॥ रगवानाह ॥ ॥ कीरुं घन यि उं दुं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥

घां गथा गतह वरु क घां यानि शध प्रवं वादि महा प्रमधं ॥ वाठ रु म म्च
 न ले न ड मि रो ड व रु क रु या द सि आ दि ल्य वा न ध लू कू सं यूर्ध सि द्य य काः
 ओ का या दा न या नि न्य या ले महा न ग न ज श्व क म रु य ल्य न या ना ना ध कू ल ड
 क सि कि डा द व न व सिः य रु कू ल रु र्ध न व सि थू कि स म न रु र्ध मा न रु यो ड म
 हा य कि कि बा यू रु का वा व कं द य का ड न या रु ला ॥ ॥ स दा कालं मं रु ल रु व रु ३ रु

२०३

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-II.

२०३